वेदों के अंतर्गत विष्णु का स्वरूप

डॉ0 इन्दु कुमारी

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 154वें सूक्त में विष्णु की स्तुति की गई है। सूक्तों की संख्या की दृष्टि से ऋग्वेद के मात्र पाँच सूक्तों में विष्णु का स्तवन किया गया है तथा उनके नाम का उल्लेख 100 बार किया गया है। संख्या की दृष्टि से तो यह सूक्त अत्यल्प हैं, किन्तु महत्ता की दृष्टि से विष्णु एक महान देव हैं। यद्यपि ऋग्वेद में इनका स्थान इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है तथापि आगे चलकर इन्होंने आर्य देवताओं में सर्वप्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया। विष्णु शब्द 'विष्लृ व्याप्तौ' धातु से बना है, जिसका अभिप्राय है–'व्यापनशील होना'। व्यापनशील होने के कारण ये सूर्य के वाचक हुए तथा जिसका अभिप्राय है–तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाला। ऋग्वेद में वर्णित चिन्हों के आधार पर ज्ञात होता है, कि विष्णु सौर देवता है अर्थात् सूर्य के ही अन्यतम प्रकार हैं।